इन्टरव्यू १८

प्र: आपका नाम क्या है ?
ज: मेरा नाम मो.इसमाइल है।

प्र: आपका करघा है कि मजदूरी पर हैं ?
ज: मजदूरी पर हैं, महीने में तीन हजार, 28 सौ, 21 सौ यही मजूरी है।

प्र: इसमें हो तो नहीं पाता होगा ?
ज: बस कोई तरीके से मालिक बेड़ा पार लगा रहे है। हा: हा:

प्र: कुछ और भी करते हैं जैसे कुछ घरों में महिलाएं कटिंग का काम करती है ?
ज: नहीं, मोती को गुहाई करते हैं। महीना में 500-600 मिलता है। बस सुबह से शाम तक 8-10 रुपय का काम है।

प्र: आप कब से बुनाई कर रहे हैं ?
ज: कम से कम तीस साल हुआ।

प्र: उम्र कितनी है ?
ज: 40 के पार है।

प्र: मतलब 10 साल के ऊपर से कर रहे हैं ?
ज: हां बस इतने से थें।

प्र: आपके पिता जी का तब अपना करघा था ?
ज: नहीं पिता जी तो हमारे बस अस्पताल ही अस्पताल में रहें।

प्र: मतलब ?
ज: हाथ पैर सब टूटा हुआ था
रूकावट
दंगे की वजह से।
शुरू
वो भी कमाने वालें तन्हा ही थे।

प्र: किस सन की बात कर रहे हैं ?
ज: सन 72 के दंगे में।

प्र: वो तो कुछ नहीं कर पाते थे ?

ज: नहीं।

प्र: तो खर्च कैसे चलता था ?
ज: तीन भाइयों की मजूरी से चलता था।

प्र: ये करघे तो आपका ही है ना ?
ज: नहीं
रूकावट
नहीं अलग-अलग लोगों यानी भाइयों का है। बंटवारा हो गया है।
शुरू

प्र: आपके जिम्मे कितना करघा है ?
ज: बस एक ठो।

प्र: आप बता रहे थे कि आप मजदूरी करते है लेकिन ये तो आपका करघा है ना ?
ज: मजदूरी ऐसा भी होता है कि सब कुछ अपने यहां लाकर अपने करघे पर बिने।

प्र: अच्छा करघा आपका है बाकि तानी-कतान सब ?
ज: हां सब व्यापारी का है।
रूकावट
ऐसा है ना कि हम यदि कहीं से सामान लाकर अपने करघे पर बिनेंगे तो मजदूरी ज्यादे मिलती है और कहीं जा कर बिनेगे तो मजदूरी कम मिलती है। हमारा 100रुपया कम हो जाएगा।

प्र: एक साड़ी का कितना मिलता है और दोनो में अन्तर क्या है ?
ज: 700-800 रुपया मजदूरी है उसका हफ्ते में एक साड़ी बुनते है महीना में चार ठो मान लिजिए तो 32 सौ मजूरी हो गई। चार ठो नहीं हुआ बीच में बीमारी हो गई तो वो भी गया।

प्र: दोनों मजदूरी में क्या अंतर है ?
ज: ले जा कर कहीं बिनेंगे तो उसका 700 होगा और लाकर अपने पर बिनेंगे तो 900 सौ होगा।

प्र: कैसे ?
ज: 200 हम लगाते है।

प्र: अच्छा आप लाकर बिनते हैं अगर उसमें कोई गड़बड़ी हो गया तब तो शायद ज्यादे करता होगा ?
ज: हां, दूसरी मजदूरी में थोड़ा गुंजाइश है।

प्र: मजदूरी तुस्त मिल जाती है या साड़ी जब बिक जाती है तब ?
ज: नहीं, साड़ी जब जायेगी तभी मिल जायेगी। घंटा दो घंटा जितना लगे।
रूकावट
मजदूरों को तुरन्त मिल जाती है। जो बेचने वालों को तुरंत नहीं मिलता मार्केट में जाकर बेचे इतना पैसा नहीं है हमारे

पास।

प्र: बच्चे भी बुनकारी सीख रहे हैं ?
ज: नहीं पढ़ रहे हैं।

प्र: उन लोगों को इस लाइन में नहीं लायेंगे क्या ?
ज: लाएगें जब वो लोग पढ़ लेगें। (दूसरे की आवाज- मैडम अब शिक्षित होना बहुत जरूरी हो गया है) पढ़ाना लिखाना बहुत जरूरी हो गया है।

प्र: बुनकारी की हालत कब से खराब हुई हैं ?
ज: करीबन चार साल से रोजगार चौपट है। जब से ये सरकार आई है ऐसे तो नरम गरम चलता था।

प्र: क्यों, ऐसा क्यों ?
ज: मंहगाई ज्यादे बढ़ी है मजदूरी व बिक्री कम हुई है। 15 दिन उधार के उधार पर बेचेंगे तो 200 रुपया होगा।

प्र: सरकार की नीति में कोई परिवर्तन आया कि कोई अन्य वजह रही कि चार साल से कभी आयी है ?
ज: क्या बताया जाय सरकार का कोई दोष नहीं है उसमें जो कर्मचारी है वो सब हैं सरकार तो बहुत कर रही है।

प्र: अच्छा जो बैंक से लोन वगैरह मिलता है उसके बारे में सुना है ?
ज: सुना तो बहुत है, कान पकड़े इससे हम।
रूकावट
हम तो ये देख रहे है कि यदि हम लोन ले तो उसका ब्याज कम कर दिया जाता है एक सरकार गई और दूसरी बनी तो पहले ही एलाउ कर देती है कि हमारी सरकार बनी तो हम किसान का सब माफ कर देंगे। जब मुलायम सिंह बैठे थे तो कहा था लोगों को माफ कर देंगे। उन लोगों का माफ हो जाता है लेकिन हम लोग का नहीं होता।